IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण विकास में महिलाओं की बदलती तस्वीर

शोध निर्देशिका
साधना भड़ारी
राजकीय डूंगर स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,बीकानेर

अलका पुरोहित
शोध छात्रा
डूंगर स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बीकानेर

सारांश

स्वतत्रंता के पश्चात् भारत में ग्रामीण विकास के लिए महिलाओं का योगदान निरन्तर बढता ही रहा है। महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर ग्रामीण क्षेत्र का विकास कर रही है। सरकार के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओ के विकास के लिए कई योजनाओं व कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है। पहले ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकत्तर महिलाएँ कृषि आधारित कार्यो को प्राथमिकता देती थी, लेकिन वर्तमान समय में महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करके गांवों का विकास कर रही है। लेकिन क्या ग्रामीण महिलाएँ सार्थक रूप से ग्रामीण क्षेत्र की तस्वीर बदलने में कारगर सिद्व हो रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह शोध पत्र अवलोकनीय है।

मुख्य शब्द– ग्रामीण महिलाएँ, ग्रामीण विकास, योजनाएँ, कार्यक्रम, पंचायत, अधिनियम सरकार।

1. **प्रस्तावनाः–** भारत में 73 वे सविधान संशोधन के उपरान्त महिलाओं को पंचायतो के चुनावी पदों व स्थानों की संख्याँ में आरक्षण मिलेगा, इस अधिनियम के पारित होने के बाद ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ अब अपने क्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं को जानने तथा उनको दूर करने के लिए कार्य भी करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामसभा के आयोजन से पहले महिलाओं की एक आमसभा का आयोजन किया जाता है। जिसमें ग्रामीण महिलाएं अपनी समस्याओं को सभा अध्यक्ष के सामने प्रस्तुत करती है। ग्रामसभा में उन समस्याओं पर विचार–विमर्श करके निवारण किया जाता, इस प्रकार ग्रामीण महिलाएं सशक्तिकरण की ओर बढ़ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका की विवेचना ही इस शोध पत्र का उद्धेश्य है।

2. **अध्ययन की आवश्यकता व महत्वः–** सरकार के द्वारा प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण किया जा रहा है। जिससे प्रत्येक महिला सुरक्षित हो सके। गाँव में महिला सशक्तिकरण केन्द्र खोले गये जो कि महिलाओं को सशक्तिकरण हेतु जागरूक करते है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ स्वयं सहायता समुह से जुडकर अपने आप को आत्मनिर्भर बना रही है। भारत सरकार के द्वारा ई–हाट शुरू किया गया, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ अपने स्वयं निर्मित वस्तुओं का प्रदर्शन कर सकती है। ग्राम सभा की मीटिंग में महिलाओं की भागीदारी में भी वृद्धि हुई ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता में भी बढ़ोतरी देखी गई है। सरकार के द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य हेतु कई योजनाएँ बनाई गई, जिसमें उड़ान योजना, जननी सुरक्षा योजना, शिशु सुरक्षा योजना, आदि प्रमुख है। ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरियों व महिलाओं के लिए निःशुल्क सैनिटरी नेपकीन प्रदान किये जाते है। ग्रामीण महिलाएँ छोटे–छोटे लघु उद्योग प्रारम्भ कर रही हैं व कसीदा, सिलाई, बुनाई कर स्वंय को आत्मानिर्भर बना रही है। सरकार के द्वारा महिलाओं को अपने व्यवसाय शुरू करने हेतु लोन की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जा रही है।

3. **अनुसंधान प्रविधिः–** प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की प्रकृति विवरणात्मक व विश्लेषणात्मक है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की बदलती तस्वीर व उनके विकास में सहयोगिता के बारे में जानने के लिए शोध संरचना के विवरणात्मक प्रकार को अपनाया गया, तथ्यात्मक व वास्तविकता को जानने के लिए सहभागी शोध प्रविधि को आधार बनाया गया है।

1. **तथ्यों का सकंलनः–** प्रस्तुत शोध अध्ययन को वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक बनाने के उद्धेश्य से तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतो से सूचनाओं व तथ्यों का सकंलन किया।

2. **प्राथमिक स्त्रोतः–** प्राथमिक स्त्रोत से सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए ग्रामसभा, पंचायतों, ग्रामीण हाट व प्रशिक्षण केन्द्रो का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया इन सूचनाओं को एकत्र करने के लिए शोधकर्ता द्वारा ग्रामीण महिलाओं व पंचायत अध्यक्ष से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया गया।

3. **द्वितीयक स्त्रोतः–** शोध अध्ययन के सैद्धान्तिक एंव ऐतिहासिक पक्ष का विवेचन करने के लिए द्वितीयक स्त्रोतो से सूचनाएँ एकत्रित की गई इसी क्रम में केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किये जाने वाले आदेश, समाचार–पत्रों, विषय से सम्बधित पुस्तकों में उपलब्ध अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

ग्रामीण विकास में महिलाओं की सहभागिता में कमी के कारण –

1. **साक्षरता की कमी** के कारण महिलाओ को ई–गवर्नेन्स के क्षेत्र में काफी समस्याओं का सामना करना पडता है।
2. **संसाधनों की कमी** के कारण ग्रामीण महिलाऐं शहरी क्षेत्र में जाकर स्वयं निर्मित व्यवसाय को सही ढ़ंग से प्रचार–प्रसार नहीं कर पा रही है।
3. **अशिक्षा** रूढिवादी परम्पराओं के कारण महिलाओं को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है।
4. **ग्रामीण** क्षेत्रों में इन्टरनेट सुविधा का बेहतर ढंग से प्रसार ना होना।

निष्कर्ष – जब तक ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूषों के समान ही सहभागिता महिलाओं की नहीं होगी, तब तक ग्रामीण क्षेत्र की विकास की तस्वीर नहीं बदलेगी, जब तक महिलाओं को शिक्षित नहीं किया जायेगा, ई–गर्वेनेन्स को बढावा नहीं दिया जायेगा तब तक ग्रामीण क्षेत्र की तस्वीर बदलना कठिन होगा।

4. सुझावः–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में इन्टरनेट सुविधा को सुचारू रूप से चलाने हेतु गांवों में नेटवर्क सेवा सही की जानी चाहिये।
2. संसाधनों में बढ़ोतरी करनी चाहिए संसाधनों की कमी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ सुदुर क्षेत्रों तक जाने से वंचित रह जाती है।
3. माइक्रों क्रेडिट प्रणाली, ग्रामीण महिलाओं में सम्प्रेषण प्रणाली का बेहतर होना।
4. साक्षरता में वृद्धि करना ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करना चाहियें, सामाजिक कुप्रथाओं का समापन करना।
5. इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में इटंरनेट की व्यवस्था, बेहतर सम्प्रेष्ण प्रणाली, माइक्रो क्रेडिट, संसाधनों इत्यादि के द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है।

5. सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. डी.पाल, बाल स्वास्थ्य का विकास प्रकाशन आशा राय, कश्मीर घाट नई दिल्ली वर्ष 1995।
2. भारत का सविधान 73 वां सविधान संशोधन।
3. माहेश्वरी डा.एस.आर, भारत में स्थानीय शासन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 1990, प्र.17।
4. राजस्थान में स्थानीय स्वशासन वार्षिकी, 1995
5. स्थानीय निकार्य विभाग, विभागीय प्रतिवेदन, वर्ष 2005।